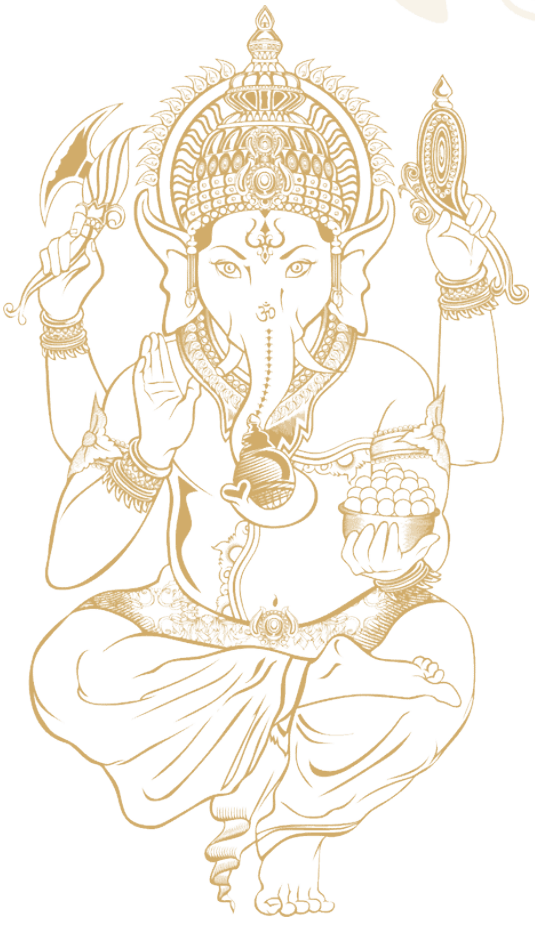

Yash

Ritika

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119924603

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/07/1998	जन्म तिथि	17/06/1998
मंगलवार	दिन	बुधवार
घंटे 15:29:00	जन्म समय	17:15:00 घंटे
घटी 24:46:54	जन्म समय(घटी)	29:26:38 घटी
India	देश	India
Alwar	स्थान	Alwar
27:32:00 उत्तर	अक्षांश	27:32:00 उत्तर
76:35:00 पूर्व	रेखांश	76:35:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:40	स्थानिक संस्कार	-00:23:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:34:14	सूर्योदय	05:28:20
19:22:33	सूर्यास्त	19:20:40
23:50:03	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:00

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 7वर्ष 5मा 5दि		29:53:09	तुला	लग्न	वृश्चि	05:45:09	गुरु 0वर्ष 6मा 22दि	
शुक्र		21:15:51	मिथु	सूर्य	मिथु	02:15:24	बुध	
11/12/2012		24:10:17	वृश्चि	चंद्र	मीन	02:51:53	08/01/2018	
11/12/2032		06:52:11	मिथु	मंगल	वृष	23:14:40	09/01/2035	
शुक्र	12/04/2016	15:48:29	कर्क	बुध	मिथु	10:57:23	बुध	06/06/2020
सूर्य	12/04/2017	04:02:28	मीन	गुरु	मीन	02:45:11	केतु	03/06/2021
चन्द्र	12/12/2018	21:30:46	वृष	शुक्र	मेष	27:51:07	शुक्र	03/04/2024
मंगल	11/02/2020	08:29:07	मेष	शनि	मेष	06:56:31	सूर्य	08/02/2025
राहु	11/02/2023	08:39:08	सिंह व	राहु व	सिंह	10:05:17	चन्द्र	10/07/2026
गुरु	12/10/2025	08:39:08	कुंभ व	केतु व	कुंभ	10:05:17	मंगल	07/07/2027
शनि	11/12/2028	17:57:11	मक व	हर्ष व	मक	18:32:06	राहु	24/01/2030
बुध	12/10/2031	07:22:31	मक व	नेप व	मक	07:50:36	गुरु	01/05/2032
केतु	11/12/2032	11:52:15	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	12:19:17	शनि	09/01/2035

लग्न-चलित

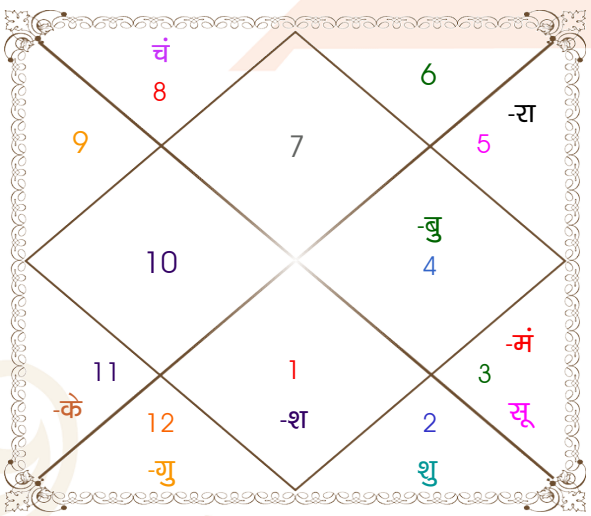

लग्न-चलित

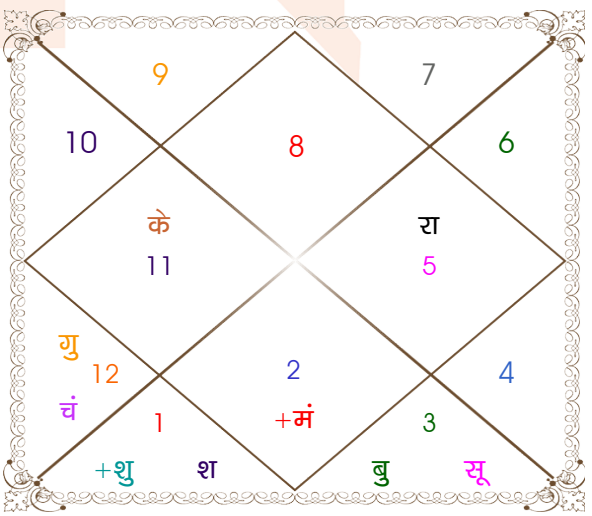

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	सिंह	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	मीन	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	9.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

लैे का वर्ग मृग है तथा त्पजपां का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार लैे और त्पजपां का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

लैे मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

त्पजपां मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल त्पजपां कि कुण्डली में सप्तम् भाव में वृष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि लैे कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता

है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु लै कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

लै तथा त्पजपां में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।